बिलावल गांव की आर्थिक संरचना का भौगोलिक विश्लेषण, बाढड़ा ब्लॉक (हरियाणा)

प्रियंका*,मोनिका, मेघा*****

*शोध छात्रा, भू–विज्ञान विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई (राजस्थान), भारत

**एम.ए. द्वितीय वर्ष, समाजविज्ञान, विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई (राजस्थान), भारत

***शोध छात्रा, अर्थशास्त्र विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई (राजस्थान), भारत

सारांशरू भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी अधिकतम जनसँख्या कृषि कार्यों में लगी हुई है,भारत में गंगा के मैदानी क्षेत्र कृषि की दृष्टि से सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र हैं, जो विश्व के सबसे सघन बसे हुए क्षेत्रों में से एक माने जाते हैं। हरियाणा राज्य भी कृषि की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यहाँ की आधे से अधिक जनसँख्या कृषि कार्यों में सलंग्न है। बिलावल गाँव में भी जनसँख्या का एक बड़ा हिस्सा कृषिगत कार्यों में लगा हुआ है। यह गाँव बाढड़ा ब्लॉक में चरखी दादरी जिले के अंतर्गत आता है, जो बाढड़ा ब्लॉक से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। आज के वर्तमान युग में सूक्ष्म स्तर के अध्ययनों की कमी पायी जाती है, जिस कारण ग्रामीण क्षेत्र सामान्यतः नियोजन से पिछड़े रह जाते हैं। अतः इस प्रकार के अध्ययन गाँव की एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यमान अनेक समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य बिलावल गाँव की आर्थिक सरंचना का भौगोलिक विश्लेषण करते हुए उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना है ताकि यहाँ उपयुक्त नियोजन को बढ़ावा दिया जा सके।

संकेताक्षरः गंगा का मैदान, कृषि, बिलावल गाँव, सूक्ष्म स्तर अध्ययन, आर्थिक सरंचना।

---

1. परिचय

आर्थिक सर्वेक्षण किसी भी क्षेत्र का गहराई से अध्ययन करने हेतु एक प्रमुख माध्यम माना जाता है, क्योंकि प्रत्येक क्षेत्र विकास के अलग अलग चरणों को प्राप्त करता है, आर्थिक सर्वेक्षण उस क्षेत्र की आर्थिक सरंचना की अनेक महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराता है जो साधारणतः सामान्य अध्ययनों में अछूती रह जाती हैं। यह एक क्षेत्र में विद्यमान समस्याओं का पता लगाने एवं उनके समाधान हेतु उपयुक्त सुझाव देने पर बल देता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन ग्रामीण लोगों की आर्थिक सरंचना, व्यवसाय, यातायात एवं परिवहन के साधन, बाजार व्यवस्था इत्यादि की जानकारी प्रदान करने के साथ साथ गाँव से जुडी अन्य जानकारियों जैसे : घरों का स्वरूप, ईंधन, कृषि प्रणालियां, मवेशी एवं जलापूर्ति जैसी महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराता है। यहाँ प्रस्तुत शोध पत्र में गाँव के अवस्थिति मानचित्रीकरण हेतु ARC GIS10.2 सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है।

2. उद्देश्य

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य बिलावल गाँव की आर्थिक सरंचना के बारे में जानकारी एकत्रित करना है।
2. गाँव की भौगोलिक सरंचना की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
3. सूक्ष्म स्तर के अध्ययनों को प्राथमिकता प्रदान करना।
4. गाँव में लोगों के व्यवसाय,मवेशी पालन, आय स्तर, कृषि उपकरणों की जानकारी प्रदान करना।
5. गाँव में विद्यमान समस्याओं का पता लगाकर उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

3. अध्ययन क्षेत्र

बिलावल हरियाणा राज्य में स्थित है जो 28°34 '28.92 " से 28°34 '37.01 " उत्तरी अक्षांशीय विस्तार एवं 76 ° 4 ' 27.86 " पूर्व से 76° 4 ' 40.4 " पूर्वी देशांतरीय विस्तार को लिए हुए है, इसका कूल क्षेत्रफल 896 हेक्टेयर है। 2011 की जनगणना के अनुसार गाँव की कुल जनसँख्या 2578 है, कुल जनसँख्या में 1211 महिलाएं एवं 1367 पुरुष विद्यमान हैं। बिलावल गाँव का नाम 'बुलाने' से पड़ा है क्योंकि यहाँ लोगों को बुलाकर बसाया गया है। अपने शुरुआती दौर में इस क्षेत्र की लोगों को जानकारी नहीं थी, जब कुछ लोगों ने इस क्षेत्र की यात्रा की तो यहाँ मिट्टी में उपयुक्त उपजाऊपन विद्यमान पाया गया जिस कारण लोगों ने बड़ी मात्रा में अपने सगे संबंधियों को इस स्थान पर आकर रहने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद निरंतर यहाँ जनसँख्या का जमघट लगता चला गया तथा गाँव अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त करता चला गया। अभी वर्तमान में गाँव में जाति आधार पर काफी विभिन्नताएं मौजूद हैं। यहाँ की प्रमुख जातियाँ जाट, चमार,ब्राह्मण, कुम्हार, नाई,रांगी इत्यादि हैं। इसके अलावा यहाँ अलग अलग गोत्र के लोगों का निवास स्थान है जिसमें महला, जांघू, नागिल, रांगी, सांगवान, सुहाग, सिंगल, भाटी,खटीक, तंवर प्रमुख हैं। यह गाँव अनेक प्रमुख गाँवों जैसे अटेला खुर्द (3 कि.मी.), अटेला नया (3 कि.मी.), डोहका हरिया (4 कि.मी.), बरसाना (5 कि.मी.), पिचौपा कलां (5 कि.मी.) से अच्छे परिवहन के साधनों के माध्यम से जुड़ा हुआ है। इसके पश्चिम में कैरू तहसील, पूर्व में दादरी, उत्तर में भिवानी, दक्षिण में पिचौपा कलां जैसे महत्वपूर्ण खनन क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है।

मानचित्र 1. बिलावल गांव की अवस्थिति

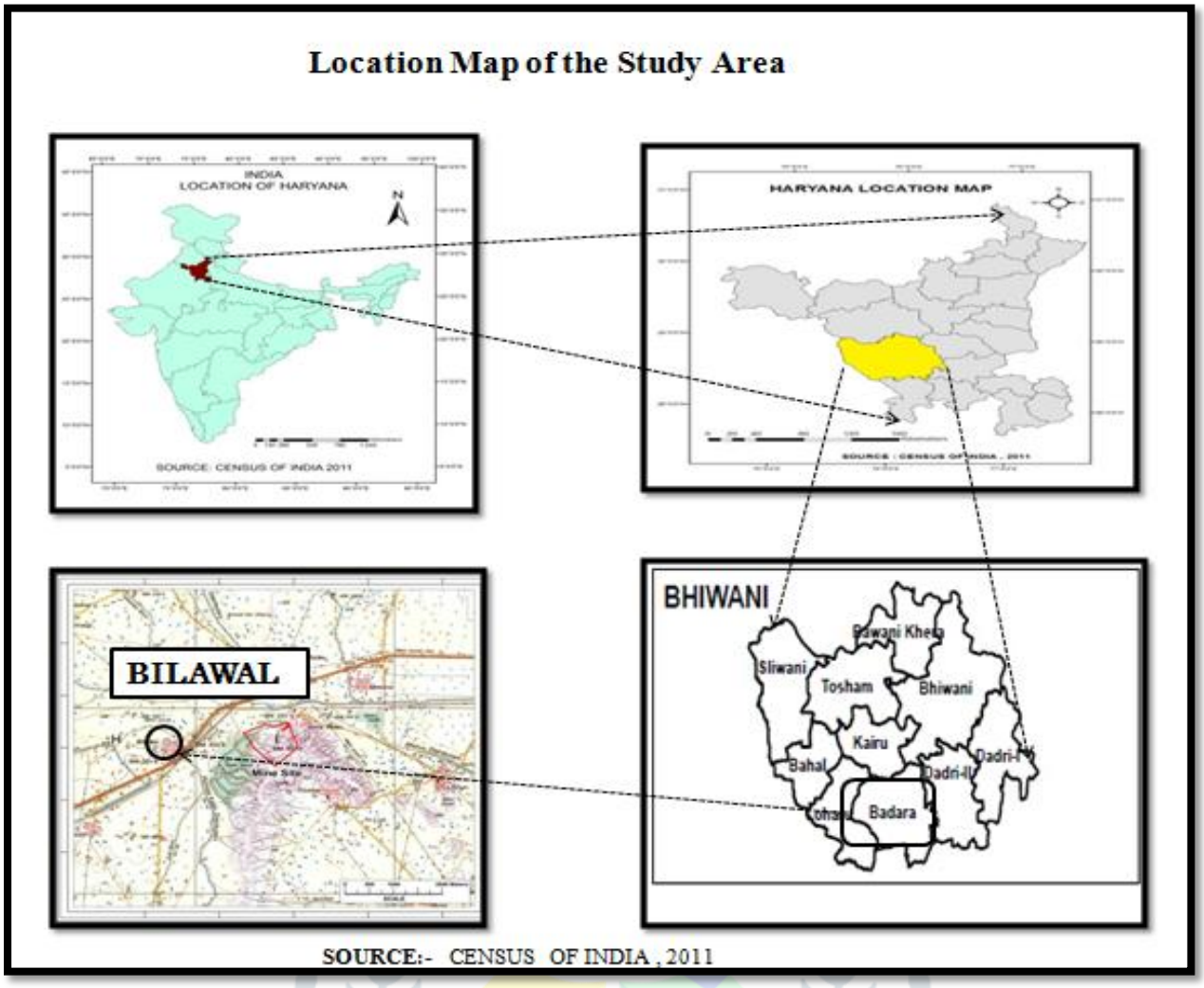

3.1. जलवायुदशाएं एवं वर्षा

बिलावल गांव में छः ऋतुएं अपनी छटा बिखेरती हैं। यहाँ प्रत्येक ऋतु दो मास की होती है। यहाँ का औसत तापमान 24.2 ° सेल्सियस है। इसके अलावा यह क्षेत्र कुल 468 मिलीमीटर वार्षिक वर्षा प्राप्त करता है।

सारणी 1. बिलावल गांव की छः ऋतुएं

ऋतु	अंग्रेजी माह (ग्रेगोरी मास)
ग्रीष्म	मई से जून
वर्षा	जुलाई से सितम्बर
शरद	अक्टूबर से नवम्बर
हेमन्त	दिसम्बर से 15 जनवरी तक
शिशिर	16 जनवरी से फरवरी तक
वसन्त	मार्च से अप्रैल

3.2. जनांकिकीय सरंचना

सारणी 2. बिलावल गांव की जनांकिकीय सरंचना

जनगणना मापदंड	जनगणना आंकडे
कुल जनसंख्या	2578
पुरुष जनसंख्या	1367
स्त्री जनसंख्या	1211
कुल घरों की संख्या	535
कुल साक्षरता दर	74.08 प्रतिशत
अनुसूचित जाति जनसंख्या	630
मुख्य कार्यकर्ता	756
सीमांत कार्यकर्ता	187

(स्त्रोतः भारत की जनगणना,2011)

4. आंकडा आधार

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है, प्राथमिक आंकड़ों में बिलावल गाँव के 100 घरों का सर्वेक्षण शामिल है। इसमें साधारणतः प्राथमिक सर्वेक्षण हेतु अवलोकन, साक्षात्कार एवं प्रश्नावली विधियों को अपनाया गया है, इसके ठीक विपरीत द्वितीयक आंकड़ों में प्रकाशित एवं अप्रकाशित लेखों, पुस्तकों, समाचार पत्र, इंटरनेट एवं भारतीय जनगणना विभाग से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

5. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित प्रणालियों का प्रयोग किया गया है–

1. प्रश्नावली विधिः गाँव में विद्यमान समस्याओं एवं आर्थिक सरंचना के मुल्यांकन हेतु प्रथमिक आंकड़ा सर्वेक्षण में प्रश्नावलीविधि को उपयुक्त विधि मानते हुए इसका प्रयोग किया है।
2. प्रतिचयन विधिः इस विधि के अंतर्गत यादृच्छिक प्रतिचयन शोध रीति का प्रयोग करते हुए सर्वेक्षण किया गया है। गाँव में विद्यमान 535 घरों में से कुल 100घरों का सर्वेक्षण यहाँ प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।
3. साक्षात्कार विधिः इस विधि के माध्यम से गाँव की आर्थिक सरंचना, व्यवसाय, मवेशी, शिक्षा का स्तर, गाँव का इतिहास इत्यादि का पता लगाया गया है।

6. परिणाम

प्रस्तुत शोध अध्ययन से निम्नलिखित शोध परिणाम दृश्टिगोचर हुए हैं जिनसे गाँव की आर्थिक सरंचना का स्वाभाविक अनुमान लगाया जा सकता है। प्रमुख परिणामों का वर्णन इस प्रकार है :–

6.1. व्यावसायिक सरंचना

सारणी 3 एवं ग्राफ 1. से स्पष्ट है कि गाँव की 50.20 प्रतिशत जनसँख्या अभी भी कृषि पर निर्भर है। गाँव का लगभग आधा भाग गैर कृषि कार्यों में सलंग्न है जिसका प्रमुख कारण गाँव से दो से तीन किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित खनन उद्योग है जहा पर गाँव की कार्यरत जनसँख्या का एक बड़ा भाग रोजगार प्राप्त करता है। इसके आलावा कुछ समय से गाँव में गैर कृषि कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है जिसमे मुख्य रूप से गाँव में ईंट बनाने के उद्योग, बर्तन बनाने के उद्योग एवं मुर्गी पालन बड़ी मात्रा में किया जा रहा है, जिसके कारण यहाँ जनसँख्या का एक बड़ा भाग प्राथमिक से द्वितीयक क्रियाकलापों की और अग्रसर होता दिखाई दे रहा है। यदि कुल जनसँख्याकी व्यवसायिक सरंचना को देखे तो यहाँ महिलाओं की भागीदारी कम देखने को मिलती है, ज्यादातार महिलाएं घर सँभालने एवं कृषि कार्यों में हाथ बटाने का कार्य करती हैं। इसलिए सरकारी एवं निजी क्षेत्र में इनकी भागीदारी कम देखने को मिलती है।

सारणी 3. बिलावल गांव की व्यावसायिक सरंचना

सेवाएं	पुरुष	प्रतिशत	महिलाएं	प्रतिशत	कुल जोड प्रतिशत में
कृषक	140	63.64	108	39.42	50.20
सरकारी	23	10.45	6	2.18	5.87
निजी	18	8.18	0	0	3.64
बेरोजगार	26	11.81	160	58.39	37.65
अन्य	13	5.90	0	0	2.63
कुल जोड	220	100	274	100	100

ग्राफ 1. बिलावल गांव की व्यावसायिक सरंचना

6.2. आय स्तर

सारणी 4 एवं ग्राफ 2से स्पष्ट है कि गाँव में आय का वितरण असमान पाया जाता है जहा गाँव का कुछ हिस्सा निम्नतम आय के स्तर को प्राप्त कर पा रहा है वहीं गाँव में 37 प्रतिशत लोगों की आय का स्तर उच्च देखने को मिल रहा है। महिलाओं में बेरोजगारी का स्तर उच्च पाया जाता है। धीरे धीरे गाँव के आर्थिक स्तर में वृद्धि देखने को मिल रही है।

सारणी 4. बिलावल गांव की आय सरंचना

आय	घरों की संख्या	मूल्य प्रतिशत में
5000 रु से कम	38	38
रु 5000 – 10,000	25	25
10,000 से अद्यिक	37	37
कुल जोड	100	100

ग्राफ 2. बिलावल गांव की आय सरंचना

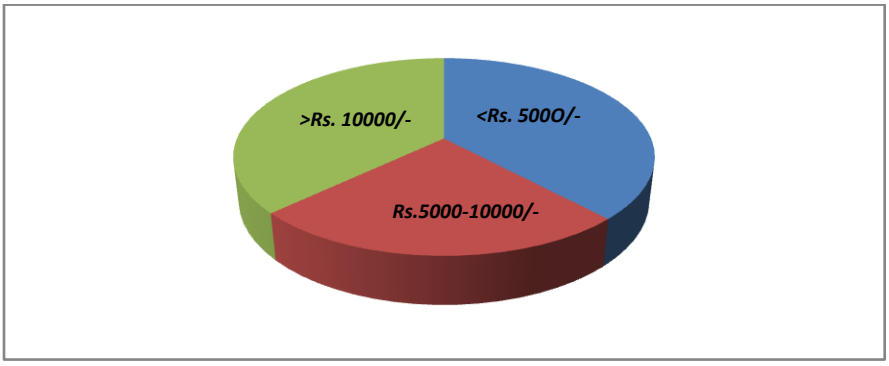

6.3. कृषकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कृषि उपकरण

सारणी 5 एवं ग्राफ 3से स्पष्ट है कि कृषकों द्वारा ज्यादातर थ्रेसर प्रयोग में लाये जा रहे हैं, धीरे धीरे हाथ से कटाई का स्थान मशीने ले रही हैं। ट्रेक्टर का उपयोग भी कृषि सम्बन्धी अनेक कार्यों हेतु यहाँ किया जा रहा है ।

सारणी 5. कृषकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कृषि उपकरण

उपकरण	वास्तविक	प्रतिशत
ळल	2	2
डीजल इंजन	9	9
इलेक्ट्रिक पंप	17	17
थ्रेसर	38	38
ट्रेक्टर	19	19
कटाई मशीन	15	15
कुल जोड	100	100

ग्राफ 3. कृषकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कृषि उपकरण

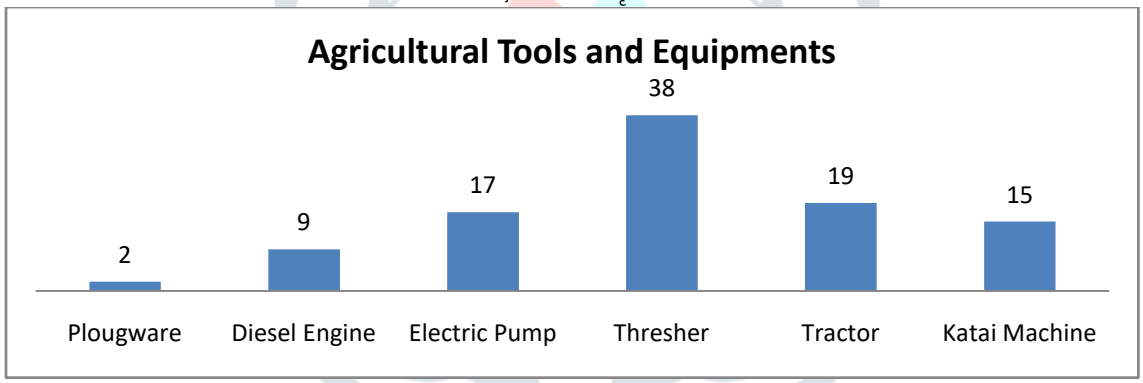

6.4. कृषि उत्पादकता में वृद्धि हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली सामग्री

सारणी 6 एवं ग्राफ 4 से स्पष्ट है कि ज्यादातर लोगों द्वारा निषेचन, एच.वाय.वी.सीडस, कीटनाशक दवाएं कृषि उत्पादकता में वृद्धि हेतु प्रयोग में लाई जा रही हैंए जो नकारात्मक विकास हेतु उत्तरदायी हैं।

सारणी 6. कृषि उत्पादकता में वृद्धि हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली सामग्री

इनपुट	घरों की संख्या
एच.वाय.वी.सीडस	26
निषेचन	45
कीटनाशक दवाएं	18
डपर्युक्त सभी	11

ग्राफ 4. कृषि उत्पादकता में वृद्धि हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली सामग्री

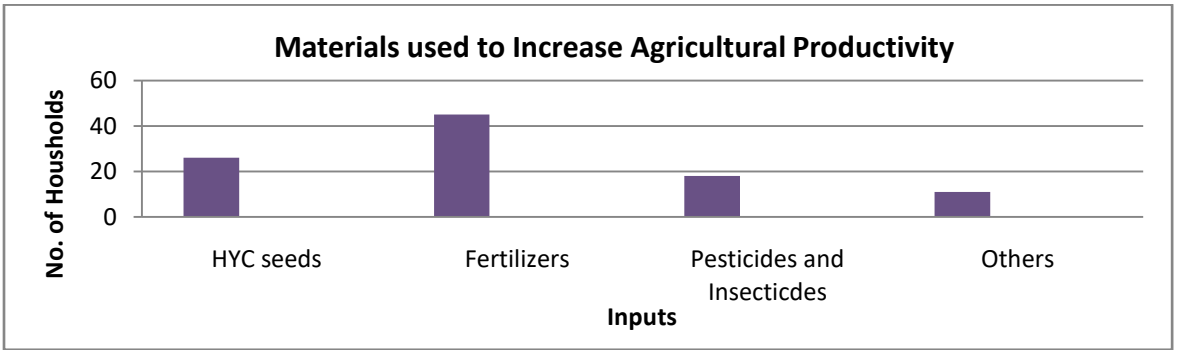

6.5. पशुपालन

सारणी 7 एवं ग्राफ 5 से स्पष्ट है कि यहाँ पशुपालन में भैंस का पालन सबसे अधिल किया जाता है। बकरी पालन सामान्यतः नीची जाति के लोंगो द्वारा ज्यादा किया जाता है। यहाँ कुछ घरों में गाय पालन बड़ी मात्रा में किया जाता है। यहाँ बैल का पालन सिर्फ दूर स्थित खेतों से चारा इत्यादि ढोने के लिए किया जाता है।

सारणी 7. पशुपालन

पशु	पूर्ण आंकडे	संबंद्यित आंकडे प्रतिशत में
गाय	18	10.71
बकरी	9	5.35
भैंस	122	72.61
बैल	19	11.30
कुल योग	168	100

ग्राफ 5. पशुपालन

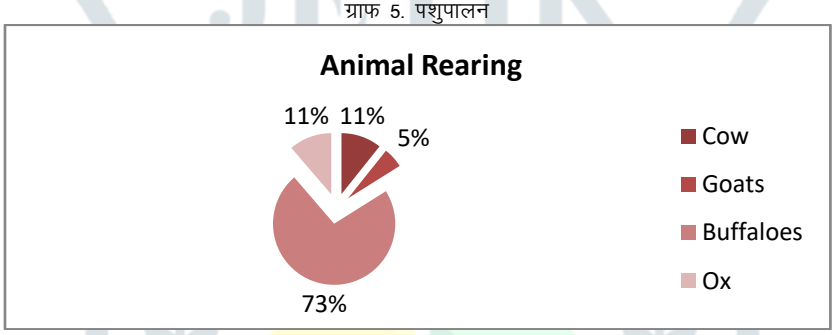

6.6. संचार के साधनों की उपलब्धता

गाँव में संचार साधनों की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में पाई गयी है, मोबाइल फोन का प्रयोग ज्यादातर घरों में किया जा रहा है। गाँव में इंटरनेट से जुड़ाव भी उचित मात्रा में है। जिसका प्रयोग नई पीढ़ी द्वारा भरपूर मात्रा में किया जा रहा है।

6.7. घरेलू आवश्यकताओं की आपूर्ति

सारणी 8 एवं ग्राफ 6 से स्पष्ट है कि गाँव में घरेलू आव्सयकताओं कि पूर्ति ठीक ढंग से पूर्ण कि जा रही है। सर्वेक्षण से प्राप्त परिणामों के अनुसार गाँव में ज्यादातर लोगों को आवश्यकता की चीजें उपलब्ध हो रही है। कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जहा सुविधाओं का अभाव है अतः यहाँ उचित सुविधाएं उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

सारणी 8. घरेलू आवश्यकताओं की आपूर्ति

घरेलू सामान	उपयोगकर्ताओं की संख्या
टी.वी.	98
फ्रिज	92
कूलर	85
कुल योग	275

ग्राफ 6.घरेलू आवश्यकताओं की आपूर्ति

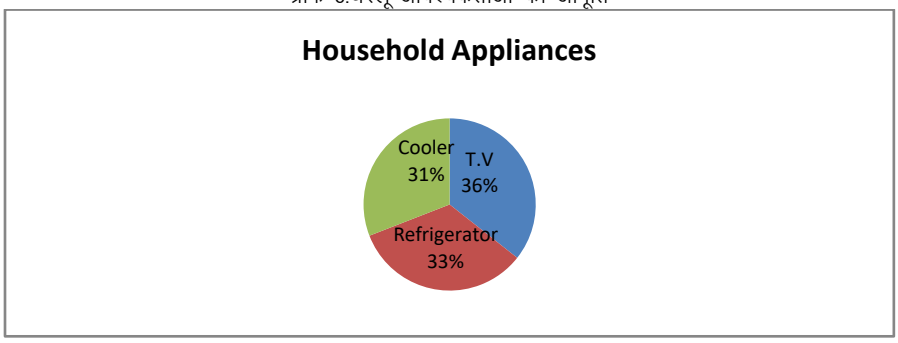

7. निष्कर्ष

बिलावल गाँव हरियाणा राज्य में स्थित है,यहाँ स्थित गाँव के अधिकतर लोग प्राथमिक एवं द्वितीयक क्रियाकलापों में सलंग्न हैं। यहाँ पर प्राथमिक व्यवसाय में खेती करना शामिल है, सिंचाई हेतु पानी की पूर्ती नहरों एवं कुओं के माध्यम से पूरी हो जाती है। गाँव की अधिकतम भूमि पर उपजाऊपन अभी विद्यमान है परन्तु कहीं कहीं पर जल भराव की समस्या के कारण लवणता की मात्रा बढ़ रही है। दूसरा यहाँ भूमिगत जल स्तर में भी कमी आती जा रही है। द्वितीयक क्रियाकलापों में गांव में ईंट बनाने के उद्योग एवं मुर्गी पालन उद्योग का विशेष स्थान है, साथ ही गाँव से दो से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित खनन उद्योग ग्रामीण लोगों को रोजगार प्रदान करने का एक प्रमुख माध्यम है। अभी हाल ही में गाँव में शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु मुफ्त लाइब्रेरी की स्थापना की गयी है , ताकि एक सर्वशिक्षित गाँव की स्थापना की जा सके।

8. गांव में विद्यमान समस्याएं

सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया की गाँव में अनेक समस्याएं व्याप्त हैं जिनके लिए उचित नियोजन करने की आवश्यकता है। गाँव में प्रमुख समस्या स्वास्थ्य सुविधाएं एवं अस्पतालों की कमी है, आपातकालीन स्थिति के दौरान गाँव से 10 किलीमीटर की दूरी पर स्थित बाढड़ा ब्लॉक स्वास्थ्य सुविधाओं का केंद्र है। इसके आलावा यहां शिक्षा हेतु स्कूलों की कमी पायी गयी है, गाँव में केवल एक ही स्कूल विद्यमान है जिसमें उच्च शिक्षा का अभाव है। गाँव में किसी भी प्रकार के ग्रामीण बैंक की उपलब्धता नहीं है, अतः लोगों को अपनी जमा पूँजी हेतु आस पास स्थित नजदीकी गाँव पर निर्भर होना पड़ता है। गाँव में अन्य समस्या स्वच्छता समस्या है, यहाँ नालियों में जल भराव के कारण मच्छर जन्म ले लेते हैं, जिसके कारण गाँव में अनेक बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है।

9. सुझाव

गाँव में विद्यमान समस्याओं के समाधान हेतु उपयुक्त नियोजन की आवश्यकता है, इसके लिए आवश्यक है कि गाँव की प्रत्येक क्रिया पर ध्यान दिया जाए, गाँव में सिचाई का एकमात्र साधन कुँए एवं नहरें हैं। अतः खेतों में खुला पानी छोड़ने के स्थान पर सिंचाई हेतु ड्रिप सिंचाई प्रणाली का विकास किया जा सकता हैं, इसके अलावा समय समय पर ग्रामीण लोगों के हित के लिए सरकर द्वारा बनाई जा योजनाओं से ग्रामीण लोगों को अवगत कराने की आवश्यकता है। अभी हाल ही में गाँव में फसलों के कटाई हेतु मशीनों का प्रयोग बढ़ा है, जिसके कारण फसल की कटाई काफी ऊपर से कर दी जाती है, इस कारण फसल के अवशेष भाग को या तो जला दिया जाता है या फिर उससे ज्यों का त्यों छोड़ दिया जाता है, जिस कारण मृदा की उपजाऊपन शक्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। पुराने समय में यहाँ अधिक उपजाऊपन का प्रमुख कारण घरेलु खाद थी जिसका प्रयोग मृदा की उर्वरता बढ़ाने हेतु किया जाता था, परन्तु वर्तमान में कीटनाशकों का प्रभाव काम करने के उद्देश्य से स्प्रे एवं निषेचन का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है जो इस ग्रामीण क्षेत्र की एक प्रमुख समस्या के तौर पर बढ़ता नजर आ रहा है, साथ ही कटाई के उपरांत खेत को खाली छोड़ने की अवधि में भी बदलाव आया है, अतः इन सभी समस्याओं के समाधान हेतु स्वयं लोगों को ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि सरकर द्वारा अनेक नियम बना दिए जाते है उनका पालन करना या न करना ग्रामीण लोगों के स्वयं के हित में है। अतः आवश्यक है की उपयुक्त नियोजन को बढ़ावा दिया जाए ताकि गाँव में सकारात्मक विकास को बढ़ावा दिया जा सके।

संदर्भ सूची

[1] Bansal,S. (2010). Rural Settlement Geography, Meenakshi Prakashan, Merut, 9-50.
[2] http://village.org.in/Bilawal
[3] http://www.censusindia.co.in/villages/bilawal-population-bhiwani-hariyana-61524
[4] http://www.haryana21.com/distt-villages/village.php?villageid=413
[5] https://en.wikipedia.org/wiki/Bilawal,_Bhiwani
[6] https://indikosh.com/vill/64800/bilawal86
[7] https://soki.in/bilawal-badhra-bhiwani
[8] https://villageinfo.in/haryana/bhiwani/badhra/bilawal.html
[9] https://www.accuweather.com/en/in/bilawal/3044828/weather-forecast/3044828
[10] https://www.accuweather.com/en/in/hr/haryana-weather
[11] https://www.mapsofindia.com/villages/haryana/bhiwani/dadri/bilawal.html
[12] https://www.wikivillage.in/village/haryana/bhiwani/badhra/bilawal
[13] https://www.jagran.com/haryana/bhiwani-13953173.html
[14] Singh,R.L. and Rana P.B. Singh.1978, Transformation of Rural Habitat in Indian Perspective, A Geographical Dimension,NGSI,Varansi.
[15] Tiwari,R.C. (1984). Adhiwas bhoogol, Prayag Pustak Bhavan, Allahabad, 2806.